दिनाँक :- 13-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- 1 th (अधिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दो

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- लेखन कला और शहरी जीवन

शहरी जीवन की शुरुआत मेसोपोटामिया में हुई थी। फरात (Euphrates) और दजला (Tigris) नदियों के बीच स्थित यह प्रदेश आजकल इराक़ गणराज्य का हिस्सा है। मेसोपोटामिया की सभ्यता अपनी सम्पन्नता, शहरी जीवन विशाल एवं समृद्ध साहित्य, गणित और खगोलविद्या के लिए प्रसिद्ध है। मेसोपोटामिया की लेखन-प्रणाली

Scanned with CamScanner

और उसका साहित्य पूर्वी भूमध्यसागरीय प्रदेशो और उत्तरी सीरिया तथा तुर्की में 2000 ई० पू० के बाद फैला, जिसके फलस्वरूप उस समस्त क्षेत्र के राज्यो के बीच आपस में, यहाँ तक कि मिस्त्र के फराओ के साथ भी मेसोपोटामिया की भाषा और लिपि में लिखा-पढ़ी होने लगी। यहाँ हम शहरी जीवन और लेखन के बीच के संबंधो की खोज करने का प्रयत्न करेंगे और फिर यह जानना चाहेंगे कि लेखन की सतत परंपरा से क्या-क्या प्रतिफल प्राप्त हुए है।

अभिलिखित इतिहास के आरंभिक काल में इस प्रदेश को मुख्यतः इसके शहरीकृत दक्षिणी भाग को (नीचे विवरण देखे) सुमेर (Sumer) और अक्कद (Akka... कहा जाता था 2000 ई० पू० के बाद जब बेबीलोन एक महत्त्वपूर्ण शहर बन गया तब दिक्ली के

दक्षिण क्षेत्र को बेबीलोनिया कहा जाने लगा। लगभग 1100 ई० पू० से जब असीरियाइयों ने उत्तर में अपना राज्य स्थापित कर लिया। तब उस क्षेत्र को असीरिया कहा जाने लगा। उस प्रदेश की प्रथम ज्ञात भाषा सुमिरियन यानी सुमेरी थी। धीरे-धीरे 2400 ई० पू० के आस पास जब अक्कदी भाषी लोग यहां आ गए तब अक्कदी ने सुमेरी भाषा का स्थान ले लिया। अक्कदी भाषा सिकंदर के समय (336-323) ई० पू० तक कुछ क्षेत्रीय परिवर्तनों के साथ फलती-फूलती रही। 1500 ई० पू० से धीरे-धीरे अरामाइक (Aramaic) भाषा का भी प्रवेश शुरू हुआ। यह भाषा हिब्रु से मिलती-जुलती थी और 1000 ई० पू० के बाद व्यापक रूप से बोली जाने लगी। यह आज भी इराक के कुछ भागों में बोली जाती है।

मेसोपोटामिया में पुरातत्वीय खोजों की शुरुआत

1840 के दशक में हुई वहाँ एक या दो स्थलों पर (जैसे उरुक और मारी में, जिनपर आगे चर्चा करेंगे) उत्खनन कार्य कई दशकों तक चलता रहा भारत में किसी भी स्थल पर इतने लंबे अरसे तक खुदाई की कोई परियोजना नहीं चली। इन खुदाइयों के फलस्वरूप आज हम इतिहास के स्रोतों के रूप में सैकड़ों की संख्या में इमारतों, मूर्तियों, आभूषणों, कलाओं औजारों और मुद्राओं का ही नहीं बल्कि हजारों की संख्या में लिखित दस्तावेजों का भी अध्ययन कर सकते हैं। यूरोपीयों के लिए मेसोपोटामिया इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि बाईबल के प्रथम भाग, ओल्ड टेस्टामेंट में इसका उल्लेख कई संदर्भों में किया गया है। उदाहरण के लिए उल्लेख है जिसका तात्पर्य अर्थात सुमेर ईंटों से बने शहरों की भूमि से है

यूरोप के यात्री और विद्वज्जन मेसोपोटामिया को एक तरह से अपने पूर्वजों की भूमि मानते थे, और जब इस क्षेत्र में पुरातत्वीय खोज की शुरुआत हुई तो ओल्ड टेस्टामेंट के अक्षरशः सत्य को सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया। उन्नीसवी सदी के मध्य से मेसोपोटामिया के अतीत को खोजे जाने के उत्साह में कमी कोई और नही आई सन 1873 में एक ब्रिटिश समाचार-पत्र ने ब्रिटिश म्यूजियम द्वारा प्रारंभ किए गए खोज अभियान का खर्च उठाया जिसके अंतर्गत मेसोपोटामिया में एक ऐसी पट्टिका की खोज की जानी थी जिसपर बाईबल में उल्लिखित जलप्लावन की कहानी का अंकन था।

1960 के दशक तक यह समझा जाता था कि ओल्ड टेस्टामेंट की कहानियाँ अक्षरशः सही नही है लेकिन ये इतिहास में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों के अतीत को अपने ढंग से

अभिव्यक्त करती है। धीरे-धीरे पुरातात्विक तकनीकें अधिकाधिक उन्नत और परिष्कृत होता गई। इसके अलावा भिन्न-भिन्न पहलुओं पर ध्यान दिया जाने लगा, यहाँ तक कि आम लोगों के जीवन की भी परिकल्पना की जाने लगी। वाईफल में उल्लिखित जलप्लावन की कहानी का अंकन था।

1960 के दशक तक यह समझा जाता था कि ओल्ड टेस्टामेंट मोसोपोटामिया और उसका भूगोल

इराक भौगोलिक विविधता का देश है। इसके पूर्वोत्तर भाग में हरे-भरे ऊंचे नीचे मैदान हैं जो धीरे-धीरे वृक्षाच्छादित पर्वत-शृंखला के रूप में फैलते गए हैं। साथ ही यहां स्वच्छ झरने तथा जंगली फूल हैं। यहां अच्छी फसल के लिए पर्याप्त वर्षा हो जाती है। यहाँ 7000 से 6000 ई० पू० के बीच खेती शुरू हो गई थी।

उत्तर में ऊंची भूमि है जहाँ 'स्तेपी' घास के मैदान के बाद भेड़ बकरियाँ यहां उगने वाली छोटी-छोटी झाड़ियों और घास से अपना भरण-पोषण करती है। पूर्व में दजला की सहायक नदियाँ ईरान के पहाड़ी प्रदेशों में जाने के लिए परिवहन का अच्छा साधन है। दक्षिणी भाग एक रेगिस्तान है और यही वह स्थान है जहाँ सबसे पहले नगरों और लेखन-प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ। इन रेगिस्तानों में शहरों के लिए भरण-पोषण का साधन बन सकने की क्षमता थी। क्योंकि फ़रात और दजला नाम की नदियाँ उत्तरी पहाड़ी से निकलकर अपने साथ उपजाऊ बारीक मिट्टि लाती रही है। जब इन नदियों में बाढ़ आती है अथवा जब इनके पानी को सिंचाई के लिए खेतों में ले जाया जाता है तब यह उपजाऊ मिट्टि वहाँ हो सकती थी फ़रात नदी रेगिस्तान में प्रवेश होने के बाद कई धाराओं में बटकर बहने लगती है।